पुथना International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class 8 Sample notebook

कविता 4 दीवानों की हस्ती कवि भगवतीचरण वर्मा

कविता का सार

प्रस्तुत कविता में कवि का मस्त-मौला और बेफिक्री का स्वभाव दिखाया गया है । मस्त-मौला स्वभाव का व्यक्ति जहां जाता है खुशियाँ फैलाता है। वह हर रूप में प्रसन्नता देने वाला है चाहे वह ख़ुशी हो या आँखों में आया आँसू हो। कवि 'बहते पानी-रमते जोगी' वाली कहावत के अनुसार एक जगह नहीं टिकते। वह कुछ यादें संसार को देकर और कुछ यादें लेकर अपने नये-नये सफर पर चलते रहते हैं।

वह सुख और दुःख को समझकर एक भाव से स्वीकार करते हैं। कवि संसारिक नहीं हैं वे दीवाने हैं। वह संसार के सभी बंधनों से मुक्त हैं। इसलिए संसार में कोई अपना कोई पराया नहीं है।जिस जीवन को उन्होने खुद चुना है उससे वे प्रसन्न हैं और सदा चलते रहना चाहते हैं।

शब्दार्थ

हस्ती:अस्तित्व
मस्ती:मौज
आलम:दुनिया
उल्लास: ख़ुशी

जग:संसार

छककर:तृप्तहोकर

भाव: एहसास

भिखमंगों:भिखारियों

स्वच्छंद:आजाद

निसानी:चिन्ह

उर:ह्रदय

भार:बोझ

आबाद:बसना

स्वयं: खुद

अति लघू उत्तर

प्रश्न- दीवानों की हस्ती कविता के रचयिता कौन है?

उत्तर- दीवानों की हस्ती; कविता के रचयिता भगवतीचरण वर्मा हैं।

प्रश्न- कवि किस बात के लिए संघर्षरत रहता है?

उत्तर - कवि समाज की भलाई के लिए हमेशा संघर्षरत रहता है।

प्रश्न- कवि किन बंधनों को तोड़ने की बात कर रहा है?

उत्तर - कवि समाज में व्याप्त बुराइयों, रूढ़िग्रस्त रीती - रिवाज़ों के परंपरागत बंधनों को तोड़ने की बात कह

रहा है।

प्रश्न- कवि ने दुनियाँ को भिखमंगा क्यों कहा है?

उत्तर - कवि ने दुनियाँ को भिखमंगा इसलिए कहा है क्योंकि दुनिया में सभी लोग एक दूसरे से कुछ न कुछ

माँगते रहते हैं।

प्रश्न-कवि जग को अपना क्या योगदान देना चाहता है?

उत्तर - कवि लोगों में खुशियाँ बाटना चाहता है। वह लोगों के मन से दुःख और भय जैसे भावों कोख को किस भाव से ग्रहण करचाहता है।

प्रश्न- कवि की मंज़िल निश्चित क्यों नहीं है?

उत्तर - कवि अपने इच्छानुसार जीवन का आनंद लेना चाहता है। उसे जो भी राह दिखती है वह उसी पर

आगे बढ़ जाता है। इसलिए कवि की मंज़िल निश्चित नहीं है।

दीर्घ प्रश्न

प्र॰1 कवि ने अपने आने को 'उल्लास' और जाने को 'आँसू बन कर बह जाना' क्यों कहा है?

उत्तर – कवि खुद के आने को उल्लास इसलिए कहते हैं क्योंकि वे जहाँ भी जाते हैं खुशियाँ फैलाते हैं तथा अपने जाने को आंसू बनकर बह जाना इसलिए कहते हैं क्योंकि इतनी खुशियों के बाद जब वो जाते हैं तो उनकी याद में लोगों को आँसू आने लगते हैं।

प्र॰2 भिखमंगों की दुनिया में बेरोक प्यार लुटाने वाला कवि ऐसा क्यों कहता है कि वह अपने हृदय पर असफलता का एक निशान भार की तरह लेकर जा रहा है? क्या वह निराश है या प्रसन्न है?

उत्तर – कवि प्रेम की दौलत संसार में लुटाता है। इतना प्रेम होने पर भी वह अपने को असफल इसलिए कहता है क्योंकि वह कभी सांसारिक व्यक्ति नहीं बन पाया। यही असफलता उसके हृदय में एक निशाँ की तरह चुभती है। किन्तु वो निराश नहीं है वह

प्रसन्न है क्योंकि यह रास्ता उसने खुद चुना है और वह इसके लिए किसी को दोषी भी नहीं ठहराता है।

प्र॰3 कविता में ऐसी कौन-सी बात है जो आपको सब से अच्छी लगी?

उत्तर – इस कविता में कवि का अपने ढंग से अपना जीवन जीना तथा चारों ओर प्यार और खुशियाँ बाँटना सबसे अच्छा लगा। कवि अपने जीवन की असफलता के लिए किसी अन्य को दोषी नहीं ठहराता यह भी अच्छा लगा।

व्याकरण

सर्वनाम

. अनिश्चयवाच कसर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से वस्तु, व्यक्ति, स्थान आदि की निश्चितता का बोधन ही होता वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम के उदाहरण:

जैसे-: कुछ, कोई आदि।

- मुझे **कुछ** खानाहै।
- मेरे खाने में **कुछ** गिर गया।
- मुझे बाज़ार से **कुछ** लाना है।
- **कोई** आ रहा है।

- मुझे **कोई** नज़रआ रहा है।

. प्रश्नवाचक सर्वनाम

जिन शब्दों का प्रयोग किसी वस्तु, व्यक्ति आदि के बारे में कोई सवाल पूछने या उसके बारे में जान्ने के लिए किया जाता है उन शब्दों को प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

प्रश्नवाचक सर्वनाम केउदाहरण:

जैसे- **कौन**, **क्या**, **कब**, **कहाँ** आदि।

- देखोतो **कौन** आयाहै?
- आपने **क्या** खायाहै?

. सम्बन्ध वाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसी वस्तु या व्यक्ति का सम्बन्ध बताने के लिए किया जाए वे शब्द सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

सम्बन्धवाचक सर्वनाम के उदाहरण:

जैसे :- **जो-सो**, **जैसा-वैसा** आदि।

- **जैसी** करनी **वैसी** भरनी।
- **जो** सोवेगा **सो** खोवेग जो जागेगा सो पावेगा।

जैसा बोओगे **वैसा** काटोगे

लेखन - बोध

दो दोस्तों के बीच जीवन लक्ष्य को लेकर संवाद लेखन -

अनिल: "तुम दसवीं कक्षा के बाद कौन सा विषय लेने की सोच रहे हो?"

आदित्य: "मैं तो विज्ञान के विषय पढ़ूंगा।"

अनिल: "क्यों?"

आदित्य: "क्योंकि मैं बड़े होकर एक डॉक्टर बनना चाहता हूँ। तुम्हारे जीवन का क्या लक्ष्य है?"

अनिल: "मैं एक अध्यापक बनना चाहता हूँ।"

आदित्य: "एक डॉक्टर सबकी सेवा करता है, लोगों के दुःख दर्द दूर करता है। मैं भी बड़े होकर बीमार लोगों की सहायता करना चाहता हूँ।"

अनिल: "मैं विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करके उनके जीवन को उज्जवल बनाना चाहता हूँ। मेरे विचार में यह सबसे अच्छी मानव सेवा है।"

स्वाध्याय : देश भक्ति पर आधारित कोई कविता लिखिए

गतिविधि : देश भकतों के चित्र चिपकाइए

पाठ 5 चिट्ठियों की अनूठी दुनिया लेखकःअरविंद कुमार सिंह

– पाठ का सार

लेखक 'पत्र' की महत्ता बताते हैं की आज का युग वैज्ञानिक युग है। मनुष्य के पास अनेक संचार के साधन हैं फिर भी मनुष्य पत्रों का सहारा जरूर लेता है। वे कहते हैं इनके नाम भी भाषा के अनुसार अलग-अलग हैं। तेलगू में उत्तरम, कन्नड़ में कागद, संस्कृत में पत्र, उर्दू में खत, तमिल में कडिद कहा जाता है। आज भी कई लोग अपने पुरखों के पत्र सहेजकर रखें हैं। हमारे सैनिक अपने घर वालों के पत्रों का इंतजार उन्होंने यह बताते हुए कहा है कि आज भी सिर्फ भारत में प्रतिदिन साढ़े चार करोड़ पत्र डाक में डाले जाते हैं। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भी पत्र के महत्त्व को माना है। लेखक

कहते हैं कि २०वीं शताब्दी में पत्र केवल संचार का साधन ही नहीं अपितु एक कला मानी गई है। इसे पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया तथा कई पत्र लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। लेखक का मानना है इस संसार में कोई ऐसा मनुष्य नहीं होगा जिसने कभी किसी को पत्र न लिखा हो।
पत्र सिर्फ एक संचार माध्यम ही नहीं हैं, ये मार्गदर्शक की भूमिका भी निभाते हैं। मोबाइल से प्राप्त एसमएस तो लोग मिटा देते हैं परन्तु पत्र हमेशा सहेज कर रखते हैं। आज भी संग्रहालय में महान हस्तियों के पत्र शोभा बने हुए हैं। महात्मा गांधी के पास पूरे विश्व से पत्र आते थे और वे उनका जवाब तुरंत लिख देते थे। 'रवीन्द्रनाथ टैगोर' और 'महात्मा गांधी' के पत्र व्यवहार को "महात्मा और कवि" के
भारत में पत्र व्यवहार की परम्परा बहुत पुरानी है। सरकारी की अपेक्षा घरेलु पत्र मुख्य भूमिका निभाते हैं क्योकि ये आम लोगो को जोड़ने का काम करते हैं। चाहे गरीब हो या अमीर सभी को अपने प्रियजनों से प्राप्त पत्र का इन्तजार रहता है। गरीब बस्ती में तो मनीऑर्डर लेकर आने वाले डाकिए को लोग देवता समझते हैं। अंत में वे कहते हैं कि अत्यधिक संचार साधनों के होने के बावजूद भी पत्रों की अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका है।

शब्दाथ

सिलसिला: चलन

विवाद: झगड़ा

दुनिया: संसार

तमाम: बहुत

केंद्रित: आधारित

अनूठी: अलग

सहेजकर: संभालकर

संदेह: शक

दायरा: सीमा

तलाशते: ढूंढते

ठिकानों: जगह

शताब्दी: सौ वर्ष

प्रयास: कोशिश

संस्कृति: परम्परा

विकसित: बढ़ावा

पाठ्यक्रमों: सिलेबस

तह: गहराई

बारीकी: सूक्ष्मता

बेसब्री: अधीरता

इकलौता: अकेला

विकसित: बढ़े

पुरखों: पूर्वजों

सँजोकर: संभालकर

विरासत: धरोहर

उद्यमी: व्यापारी

अनुसंधान: खोज

अति लघू प्रश्न

प्रश्न- विश्व डाक संघ की ओर से सन् 1972 से किस प्रतियोगिता का सिलसिला शुरू किया गया?

उत्तर – विश्व डाक संघ की ओर से 16 वर्ष से कम आयुवर्ग के बच्चों के लिए पत्र लेखनआने को उल्लास और जाने को आँसूप्रतियोगिताएँ आयोजित करने का कार्यक्रम सन् 1972 से शुरू किया गया।

प्रश्न- पुराने समय में पत्रों का अधिक महत्व क्यों था?

प्रश्न- ऐसा क्यों होता था कि महात्मा गाँधी को दुनिया भर से पत्र ;महात्मा गांधी - इंडिया

पता लिखकर आते थे?

प्रश्न- पत्र लेखन की कला के विकास के लिए क्या-क्या प्रयास हुए? लिखिए।

प्रश्न- क्या चिट्ठियों की जगह कभी फैक्स, ई-मेल, टेलीफोन तथा मोबाइल ले सकते हैं? बनकर बह जाना क्यों कहा

लघू प्रश्न

प्र॰1 पत्र जैसा संतोष फोन या एसएमएस का संदेश क्यों नहीं दे सकता?

उत्तर – पत्र जैसा संतोष फोन या एसएमएस का संदेश नही दे सकता क्योंकि पत्र जो काम कर सकते हैं, वह नये जमाने के संचार के साधन नहीं कर सकते। पत्र एक नया सिलसिला शुरू करते हैं और राजनीति, साहित्य तथा कला के क्षेत्रों में तमाम विवाद और नयी घटनाओं की जड़ भी पत्र ही होते हैं। दुनिया का तमाम साहित्य पत्रों पर केंद्रित है और मानव सभ्यता के विकास में इन पत्रों ने अनूठी भूमिका निभाई है।

प्र॰2 पत्र को खत, कागद, उत्तरम्, जाबू, लेख, कडिद, पाती, चिट्ठी इत्यादि कहा जाता है। इन शब्दों से संबंधित भाषाओं के नाम बताइए।

उत्तर – पत्र को उर्दू में खत और चिट्ठी, सस्ंकृत में पत्र, कन्नड़ में कागद, तेलुगु में उत्तरम्, जाबू और लेख, हिंदी में पाती तथा तमिल में कडिद कहा जाता है।

दीर्घ प्रश्न

प्र॰1 पत्र लेखन की कला के विकास के लिए क्या-क्या प्रयास हुए? लिखिए।

उत्तर – पत्र लेखन की कला के विकास के लिए निम्न प्रयास हुए। डाक व्यवस्था के सुधार के साथ पत्रों को सही दिशा देने के लिए विशेष प्रयास किए गए। पत्र संस्कृति विकसित करने के लिए स्कूली पाठ्यक्रमों में पत्र लेखन का विषय भी शामिल किया गया। विश्व डाक संघ की ओर से 16 वर्ष से कम आयवुर्ग के बच्चों के लिए पत्र लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित करने का सिलसिला सन् 1972 से शुरू किया गया।

प्र॰2- पत्र धरोहर हो सकते हैं लेकिन एसएमएस क्यों नहीं? तर्क सहित अपना विचार लिखिए।

उत्तर – आज देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो अपने पुरखों की चिट्ठियों को सहेज और सँजोकर विरासत के रूप में रखे हुए हों, पत्रों को तो आप सहजेकर रख लेते हैं पर एसएमएस सदेंषां को आप जल्दी ही भूल जाते हैं। कितने संदेशों को आप सहेजकर रख सकते हैं? तमाम महान हस्तियों की तो सबसे बड़ी धरोहर उनके द्वारा लिखे गए पत्र ही हैं। भारत में इस श्रेणी में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को सबसे आगे रखा जा सकता है। दुनिया के तमाम संग्रहालय में जानी मानी हस्तियों के पत्रों का अनूठा संकलन भी हैं। इसलिए कहा जाता है कि पत्र धरोहर हो सकते हैं लेकिन एसएमएस नहीं।

प्र॰3 क्या चिट्ठियों की जगह कभी फैक्स, ई-मेल, टेलीफोन तथा मोबाइल ले सकते हैं?

उत्तर – चिट्ठियों की जगह कभी फैक्सए ई-मेलए टेलीफ़ोन तथा मोबाइल नहीं ले सकते है क्योंकि यह सब वैज्ञानिक युग के हैंए जो मानव के लिए बहुत महत्त्व रखते है परन्तु ये कभी भी पत्रों का स्थान नहीं ले सकते।
जितना प्रेम और अपनापन हमे पत्रों में लिखित एक-एक शब्द द्वारा मिलता है वह इन

विकसित संचार साधनो द्वारा नहीं। इसलिए ये कभी भी चिट्ठियों का स्थान नहीं ले सकते।

व्याकरण

विशेषण की परिभाषा

- विशेषण वे शब्द होते हैं जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं। ये शब्द वाक्य में संज्ञा के साथ लगकर संज्ञा की विशेषता बताते हैं।

विशेषण के भेद

1. गुणवाचक विशेषण :

जो विशेषण हमें संज्ञा या सर्वनाम के रूप, रंग आदि का बोध कराते हैं वे गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं। **जैसे:**

- ताजमहल एक सुन्दर इमारत है।
- जयपुर में पुराना घरहै।
- जापान में स्वस्थ लोग रहत हैं।
- मैं ताज़ा सब्जियां लाया हूँ

2. संख्यावाचक विशेषण :

ऐसे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की संख्या के बारे में बोध कराते हैं वे शब्द संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। **जैसे:**

- विकास चार बार खाना खाता है।
- मीना चार केले खाती है।
- दुनिया में सात अजूबे हैं।
- हमारे विद्यालय में दो सौ विद्यार्थी पढ़ते हैं।

3. परिमाण वाचक विशेषण :

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा के बारे में बताते हैं वे शब्द परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं। **जैसे:**

- मुझे एक किलो टमाटर लाकर दो।
- बाज़ार से आते वक्त आधा किलो चीनी लेते आना।
- जाओ एक मीटर कपड़ा लेकर आओ।
- मुझे थोड़ा सा खाना चाहिए।

4. सार्वनामिक विशेषण :

जो सर्वनाम शब्द संज्ञा से पहले आएं एवं विशेषण की तरह उस संज्ञा शब्द की विशेषता बताएं तो वे शब्द सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं। **जैसे:**

- यह लड़का कक्षा में अव्वल आया।
- वह आदमी अच्छे से काम करना जानता है।
- यह लड़की वही है जो मर गयी थी।
- कौन है जो सबसे उत्तम है ?

लेखन कार्य

आपके क्षेत्र में डाकिए के अनियमितता के कारण हो रही परेशानी के लिए पोस्ट मास्टर को शिकायती पत्र लिखिए-

225, तिलक नगर,

नई दिल्ली

तारीखः

सेवा मेरे

पोस्ट मास्टर,

जगी कश्मीर गेट,

नई दिल्ली सर,

मुझे यह बताने के लिए बहुत अफसोस है कि मेरे पत्र मेरे पास ठीक से नहीं दिए गए हैं

हमारे क्षेत्र के डाकिया, श्री सुनील पाल, बहुत अनियमित और लापरवाह हैं। वह अपनी कर्तव्य ईमानदारी से नहीं करता है उसने अपने अक्षरों को गलत व्यक्तियों या सड़क पर खेलने वाले बच्चों को मेरे नाम और पते पर एक पत्र बॉक्स रखा। लेकिन वह मेरे घर मेरे घर में नहीं डालते हैं मैंने उससे कई

बार अनुरोध किया, लेकिन इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। इसलिए, मैं आपको उसके खिलाफ शिकायत करने के लिए बाध्य है।

कृपया आवश्यक कार्रवाई करें। मैं इस बात के लिए आपके लिए बेहद आभारी हूं।

आपका आभारी,

आपका नाम

रमेश

स्वाध्यायः पत्र के पकार लिखिए किसी एक का वर्णन कीजिए-

गतिविधिः लेटरबक्स का चित्र बनाइए-

PUNA